Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ३५१६

Title कल्याण मन्दिरं जैन भाषा लिपि

Author x

Extent ३ Age

Subject धर्मशास्त्रं

॥ॐ॥परमज्योतिपरमातमा।परमग्यांनपरवीन।वंदोपरमानंदमय।घटघटअंतरलीन
चौपी निरभयकरनपरमपरधान।भवसमुद्रजलतारणजान।शिवमंदिरअघहरण
अनिंद।वंदोपासचरणअरविंद॥२॥कमठमानभंजनवरवीर।गरिमासागरगुणगं
भीर।सुरगुरुपारलहेनहीजास।मेंअजानजंपेजसतास॥३॥प्रभुसरूपअतिअग
मअथाह।क्योंहमसेंयेहोइनिवाह।ज्योंदिनअंधउलूकोपूत।कहिनसकेंरविकिरणउ
द्योत॥४॥मोहहीनजांनेमनमांहि।तऊनतुमगुनवरनेजांहि।प्रलयपयोधिकरेजलवों
न।प्रगटैरतनगिनेतहांकोंन॥५॥तुमअसंख्यनिरमलगुणखांन।मेंमतिहीनकहूंनिज
वांन।ज्योंबालकनिजबांहपसार।सागरपरमितकहेविचार॥६॥जेजोगिंदकरेंतपखेद
तऊनजांनेतुमगुनभेद।भगतिभावमुझमनअभिलाष।ज्योंपंछीबोलेनिजभाष॥७
तुमजसमहिमाअगमअपार।नामएकत्रिभुवनआधार।आवेपवनपदमसरहोइ।ग्री
षमतपतिनिवारेसोइ॥८॥तुमआवतभविजनमनमांहि।करमनबंधसिथिलह्वेजां
हि।ज्योंचंदनतरुबोलेमोर।डरेंभुयंगलगेचिहुंओर॥९॥तुमनिरखतजिनदीनदयाल।
संकटतेंछूटेंततकाल।ज्योंपसुघेरलीयेनिसिचोर।ततजभाजेदेखतभोर॥१०॥तुमभविजन

तारकक्योंहोइ।तेचितधारततेरेलेतोइ।यहऐसेकरजानसुभाव।तिरेमसकज्योंगरभनिता
वाव।२१।जिनसबदेवकीएवसिकाम।तैंछिनमेंजीतेसबकाम।ज्योंजलकरेअगनकउदा
न।कहावानलपीवेसोपान।२२।तुमअनंतगिरुवागुनलीये।क्योंकरमनगतिकसंतिजहीये
होइलघुरूपतिरेसंसार।यहप्रभुमहिमाअगमअपार।२३।क्रोधनिवारकीयेमनशां
ति।करमसुभटजीतेकिहभांति।यहपटंतरदेख्योसंसार।नीलविरछज्योंदहेतुसार।२४।
मुनिजनहीयेकमलनिजटोहि।सिद्धरूपसमध्यावेतोहि।कमलकर्णिकाविनुनहीऔर।
कमलबीजउपजनकीठोर।२५।जबतुमध्याननकरेमुनिकोइ।तबविदेहपरमातमहोइ।
जैसेधातुसिलातनुत्याग।कनकसरूपधरेजबआग।२६।जाकेमनतुमकरहुनिवा
स।विनसजायसबविग्रहतास।ज्योंमहंतबिचआवेकोय।विग्रहमूलनिवारेसोइ।२७।
करहिविबुधजेआतमध्यान।तुमप्रभावतेंहोइनिदान।जैसेनीरसुधाअनुमान।पीव
तविषविकारकीहान।२८।तुमभगवंतविमलगुनलीन।समलरूपमानेमतिहीन।१
ज्योंपीलियारोगछिगगहे।वर्णविवर्णसंखसोंकहे।२९।दोहा।निकटरहितउपदेससुस १
नि तरुवरभएअशोक।ज्योंरविऊगतजीवसब।प्रगटहोतभुविलोक।३०।सुमनवृ

छिजे सुर करै। देव वीट मुष सोइ। तें उत्तम से थित सुमन जन। बंध अधो मुष होइ ॥२१॥ उप
जीउ मही यन दर्षितं। बानी सुधा समान। जिहि पीवति तिन विजन न लहै। अजर अमर पद ठा
ठान ॥२२॥ कर हि सार त्रिजं लोक कौ। एसुर चामर दोइ। नाव सहित जो जन नमैं। तसु ग
ति ऊरध होइ ॥२३॥ सिंहासन गिरि मेरु सम। प्रभु धुनि गरजित घोर। श्याम सु तनु घनम रूप
लषि। नाचित न विजन मोर ॥२४॥ छबि हित होइ अशोक दल। उपमा मंद लदेव। वीतराग
कै निकट रहि। रहे न राग विशेष ॥२५॥ सीष कहै तिजं लोक कौ। एसुर दुंदुभि नाद। शिव प
थ सारथ वाह जिन। भजों तजो परमाद ॥२६॥ तीन छत्र त्रिभुवन उदित। मुक्ता गंता गन छबि
देत। त्रिविधि रूप धर मान जु शशी। सेवत नषत समेत ॥२७॥ छंद पद्धडी॥ प्रभु उत्तम सरीर
द्युति रतन जेम। परताप वृंज जिम सुद्ध हेम। अति धवल सुजस रूपा समान। तिनके गढ
तीन विराजमान ॥२८॥ सेवहि सुरिंद कर नमित माल। तिन सीस मुकुट तजि देव माल। उम
वरसाल मत लहत लहै जीति। नहि रमैं सुमन जन नउर रीति ॥२९॥ प्रभु नेत्र गति मुष तन कमं
दाह। जन पार कारत न व जल निवाह। ज्यों माटी कल समुपक्क होइ। लेनार अधो मुषति रि
ताइ ॥३०॥ उम मम हा राज निरधन निरास। न जि विभो कित व जग य विकास। अहार सुनार सें

लिषै न कोइ। महिमा अनंत न गावंत सोइ ३१ को पीयैं कमठ तिजै वैर देष। तिन करी इलि
वरषा विशेष। जे नुत्तम स्वायान धरी ज्वई हीन। सो जयो पाप तुं पट मलीन ३२ गर्जित घोर
रयन अंधकार चमकंत विज्जुलि जल मुसल धार वरषंत कमठ धरि ध्यान रुद्र दुस्त
र करंत निज नव समुद्र ३३ वस्तुछंद मेघ माली मेघ माली। आए वहल फोर। नजे त्रु
रत्त पिशाच गण नाथ प्रासत्र उपसर्ग कारण। आगति काल स्वरूप तें मुख। धुनि करंत जि
म मच्छ वारण। काल रूप विकराल तन। रुंड माल तिन कंठ। ठह निसंक यह रंक नि
ज करे करम दिढ गंठ ३४ चौपई जे तुम चरण कमल तिहुं काल। सेवै तज माया जं
जाल। भाव भक्ति मन हरष बढ़ाय। धन धन जग तिन का अवतार ३५ भवसाग
र में फिरत अजान। मैं तुम सुजस सुन्यों नहीं कान। जो प्रभु नाम मंत्र मन धरै। ता सौं वि
पति भुयंगम डरै ३६ मन वांछित फल जिन पद मांहि। मैं पूरव भव पूजे नांहि माया म
गन फिरयौ अग्यान। करे रंक जन मुझ अपमान ३७ मोह तिमिर छायौ दृग मोहि। जनां
तर देख्यौ नहि तोहि। तो दुरजन मुझ संगत गहैं। मरम छेद के कुवचन कहैं ३८ सुन्यौ २
कांन जस पूजे पाइ नैंन न देख्यौ रूप अघाइ भगति हेत न भयौ चित चाव दुखदाय

कुंक्रियाःविस्तार ३९ महाराजसरणागतपाल। पतितउधारणदीनदयाल। सुमर
णकरौंनाइनिजसीस। मुझदुषदूरकरोजगदीस ४० करमनिकंदनमहिमासार।
असरनसरणसुजसविस्तार। नहिंसेवेतुमसेप्रभुपाइ। तोमुझजनमअकारथथा
थाइ ४१ सुरगणवंदितदयानिधान। जगतारनजगपतिजगजान। दुषसागरतैं
मोहिनिकास। निरभयथानदेहुसुषरास ४२ मैंतुमचरणकमलगुनगाइ। बहु
विधिभगतिकरीमनलाई। जनमजनमप्रभुपावौंतोहि। यहसेवाफलदीजेमोहि
४३ देषकों नरेसरिछंद इहविधिश्रीभगवंतसुजसजेभविजनभाषै। तेनिजपुन्य
भंडारसंचिचिरपापप्रणासै। रोमरोमहुलसंतिअंगप्रभुगुनमनध्यावै। सुरगसंपदा
भुंजवेगपंचमगतिपावै। यहकल्याणमंदिरकीयोकुमदचंदकीबुद्धि। भाषाक
हतबनारसी कारनसमकितसुद्धि ॥४४॥ इतिश्रीकल्याणमंदिरभाषास्तोत्रम

दोहा रेमनपंछीसमझतुगा। उरकपरेमतमांहि। कविनकंदइहपेमका। परेस्यो
निकसेनांहि २ श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ॥श्रीरस्तुवाचकानाम् ॥श्री

कल्याणमंदरस्तोत्र